दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक : 16.01.2026

प्रकाशनार्थ

गोरखपुर 16.01.2026। दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर में रूपान्तर नाट्य मंच गोरखपुर एवं हिन्दी विभाग दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित स्व0 प्रो0 गिरीश रस्तोगी की 11वीं पुण्यतिथि के अवसर पर "पूर्वांचल के साहित्यकारों का नाट्य लेखन में योगदान" विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता फिल्म निर्देशक एव रंग कर्मी प्रदीप सुविज्ञ ने कहा कि नाटक का अपना एक अलग वजूद है, जबकि कुछ का मानना है कि नाटक साहित्य का एक विस्तार है। नाटक साहित्य से अविभाज्य है और यह अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। शब्दों के माध्यम से ही हम नाटक का विषय स्पष्ट करते हैं, परन्तु यदि नाटक सक्षम है तो इसे भाषा अवरोधित नहीं करती। गोरखपुर की धरती प्रेमचन्द व फिराक की है, जहाँ कलात्मक अभिव्यक्ति का माद्दा रखने वाले ही इतिहास के पन्नों में सदैव बने रहते हैं। मुंशी प्रेमचन्द की कहानी को लेकर बहुत सारे नाटकों का मंचन दिखता है। नाटक मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि यह अभिव्यक्ति का माध्यम है और नाटक एक बड़े परिवर्तन का भी माध्यम है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. रामदरश राय ने कहा कि साहित्य की प्रत्येक विधा में नाटक का बीज होता है। साहित्य का सर्वोत्तम सौन्दर्य भी लोक नाटक है। बिना नाटय प्रतिभा के सुन्दर व सशक्त नाटक की रचना नहीं हो सकती। साहित्य के लोग इस विषय को लेकर शोध कार्य कर सकते हैं। वास्तव में नाटक को साहित्य से अलग करके नहीं देखा जा सकता, क्योंकि यह दोनो ही एक ही कुटुम्ब के हैं।

कार्यक्रम में हिन्दी विभाग प्रभारी प्रो. नित्यानन्द श्रीवास्तव, अभियान साहित्यिक संस्था के निदेशक श्री नारायण पाण्डेय, डॉ. आनन्द पाण्डेय, आकृति विज्ञा अर्पण, रंगकर्मी अजीत प्रताप सिंह, रीता श्रीवास्तव, सुनील जायसवाल, डॉ. सुशीला चतुर्वेदी, राजेश वर्मा आदि ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि नाटक लेखन, कविता लेखन से अधिक समय व धैर्य मांगता है। नाटककार कभी दर्शक को खुश करने का प्रयास नहीं करता, बल्कि दर्शक को परिष्कृत करता है। हमारी वर्तमान समस्याओं को लेकर भी नाट्य लेखन होना चाहिए। ऐतिहासिक नाट्य मंचन के साथ ही स्थानीय लिखे नाटकों का भी मंचन होना चाहिए।

कार्यक्रम में आभार ज्ञापन करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि समाज के एक सजग प्रहरी के रूप में साहित्यकार व नाटककार की दृष्टि सचेत रहती है। वर्तमान समय के अनुसार इस दिशा में और परिष्कृत व सशक्त कार्य करने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम का संचालन निशिकान्त पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर डॉ. विभा सिंह, डॉ. राकेश सिंह, डॉ. सुनील सिंह, डॉ. अदिती दूबे सहित महानगर के रंगकर्मी, साहित्यकार व शोधार्थी उपस्थित रहे।

(सुनील कुमार सिंह)
सह प्रभारी, सूचना एवं जनसम्पर्क